जिंमीकन्द की व्यवसायिक खेती

कृषि कुंभ (जुन, 2023),
खण्ड 03 भाग 01, पृष्ठ संख्या 54–56

जिंमीकन्द की व्यवसायिक खेती

डॉ0 विजय कुमार विमल[1], डॉ0 अर्चना देवी[3] एवं प्रो0 डी. के. सिंह[3]
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान)[1], प्राध्यापक (फसल सुरक्षा)[2] एवं प्रभारी अधिकारी एवं सह अधिष्ठाता[3]
कृषि विज्ञान केन्द्र, कोटवा, आजमगढ़।
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रोद्यौगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, (उ. प्र.), भारत।
Email Id:vijaykumarvimal5@gmail.com

जमींकन्द एक बहुवर्षीय कन्दीय फसल है। जिसे सूरन व ओल आदि नामों से भी जाना जाता है। पहले इसे हम अपने गृह वाटिका या घर के आसपास खाली पड़ी जमीन में उगाते थे किन्तु अब इसकी खेती बड़े पैमाने पर की जाने लगी है।

औषधीय गुणों के कारण जाना जाता है। इन गुणों के कारण यह सब्जियों में एक अलग स्थान रखता है। इसकी महत्ता को देखते हुए हमारे हिन्दु धर्म में भी इसे एक विषेश स्थान देते हुए दीपावली के दिन इसका उपयोग किया जाता रहा है। सूरन का उपयोग बवासीर, श्वॉसरोग, फेफड़ों की सूजन व खून साफ करने हेतु लाभप्रद होता है। इससे बना अचारघरों में बहुत पसंद किया जाता है। सब्जी के अतिरिक्त इससे अच्छी गुणवत्तायुक्त पापड़ व चिप्स भी बनाये जाते हैं।

जलवायु एंव मृदा

जिंमीकन्द के अच्छी वानस्पतिक वृद्धि के लिए उत्तम जल निकास वाली बलुई दोमट मिट्टी जिसका पी.एच. 6 से 7 हो उत्तम मानी जाती है। कन्दों के अच्छे अंकुरण के लिए कम से कम 30^0 से 35^0 सेल्सियस तापमान की आवश्यकता पड़ती है।

प्रजातियां

जिंमिकन्द में कैल्शियम आक्जलेट उपस्थित होने के कारण गले में कनकनाहट होती थी जिसके कारण इसे कम पसन्द किया जाता था, लेकिन अब कनकनाहट रहित प्रजातियों के विकास हो जाने के कारण इसे बहुत पसन्द किया जाने लगा है। इसमें से कुछ प्रमुख प्रजातियॉ निम्नवत हैं

गजेन्द्राः– इस प्रजाति के कन्द के गूदे का रंग हल्का गुलाबी होता है। इसे मार्च अप्रैल में उगा कर आप गेंहुं की फसल आसानी से उगा सकते हैं। यह प्रति हेक्टेयर 150 से 200 क्विण्टल उपज देती है।

नरेन्द्र जिंमीकन्द–5 :– यह सूरन की मध्यमक्रम की 190 से 220 दिनों में तैयार होने वाली प्रजाति हैा इस प्रजाति की औसत उपज 600–700 क्विन्टल प्रति हेक्टेयर होती है।

नरेन्द्र जिंमीकन्द–9 :– यह सूरन की अगेती किस्म है जो 180 से 210 दिनों में तैयार हो जाती हैा इसकी औसत उपज 650 से 700 क्विन्टल प्रति हेक्टेयर है।

भूमी की तैयारी व बुआई का समय

एक जुताई मिट्टी पलट हल से करने बाद दो तीन जुताई कल्टीवेटर से करने के बाद पाटा लगाकर मिट्टी को भुरभुरी बना लेते है । उत्तर भारत में जिंमीकन्द की बुआई का उचित समय मार्च अप्रैल है । लेकिन इसे मई तक भी लगा सकते है। जबकि दक्षिण भारत में इसकी बुआई मई मे करते हैं।

प्रवर्धन

सूरन का प्रवधन कन्दों के द्वारा होता है, प्रत्येक कन्द को 500 से 750 ग्राम के टुकडों में काट लिया जाता है या इतने ही ग्राम के कन्द का चुनाव करते है। कन्दों को बोने से पुर्व 2 प्रतिषत तूतिया का घोल या डाइथेन.एम–45 से उपचारित कर सकते है। कन्दों को टुकडों में विभक्त करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक टुकडों में कालर का भाग जहां से पौधा जमता है होना नितान्त आवश्यक है और बुआई के समय कन्द के कालर वाला भाग ऊपर होना चाहिए।

लगाने की विधि एवं दूरी

प्रायः दो विधियां प्रयोग में लायी जाती हैं।

1:– चौरस खेत में– इस खेत में आखिरी जुताई के समय गोबर की खाद नाइट्रोजन एंव पोटास 1/3 मात्रा व फास्फोरस की सम्पुर्ण मात्रा भूमि में मिला देतें है। इसके बाद आकार के अनुरुप 75–90 सेण्टीमीटर की दूरी पर 20 से 30 सेमी.गहरी नाली का निमार्ण करके कन्दों की बुआई करके नाली को बन्द कर देते हैं।

2:– गड्ढों में– इस विधी में 30×30×30 सेमी. तक गडढों का निमार्ण 90×90 सेमी. की दूरी पर कन्दों के आकार के आधार पर कर ली जाती है। निकाली गई मिट्टटी में निर्धारित मात्रा में खाद व उर्वरक मिलाकर गड्ढढों को बन्द कर देते हैं

खाद एंव उर्वरक

जिंमीकन्द की फसल की अच्छी उपज के लिए अन्तिम जुताई के समय 15 से 20 क्विण्टल गोबर की खाद मिला देते हैं और 80 किग्रा0 नत्रजन, 60 किग्रा0 फास्फोरस और 90 किग्रा0 पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करते हैं। नत्रजन की आधी मात्रा बुआई के समय एंव आधी बची मात्रा को दो भागों में बुआई के लगभग 1 महीने के बाद एंव बची हुई मात्रा नत्रजन बुआई के ढाई से तीन महीने के बाद खेत में मिला देते हैं।

सिचाई

अगर खेत में नमीं नहीं है तो कन्दों की बुआई के बाद एक हल्की सिचाई की आवश्यकता पड़ती है। खेत में नमीं बनाए रखने के लिए 7 से 8 दिनों पर सिचाई की आवश्यकता होती है। अच्छे जमाव के लिए खेत में नमीं बनें रहना अति आवश्यक है।

मलचिंग एवं खरपतवार नियन्त्रण

बुआई के तुरन्त बाद पुआल व पत्तियों से ढक देते है ताकि नमीं रहे। इससे खरपतवार पर भी नियन्त्रण हो जाता है

खरपतवार नियन्त्रण के लिए पहली निराई गुडाई बुआई के 40 से 60 दिन के बाद व दूसरी 80 से 90 दिनों के बाद करनी चाहिए।

सहफसल

सूरन के साथ आप किसान बन्धु हल्दी, प्याज, धनिया, सरसो आदि फसल को सहफसली के रुप में ले सकते हैं।

प्रमुख रोग एंव रोकथाम

हालाँकि जिंमीकन्द में बहुत कम रोग एवं कीड़ों का प्रकोप होता है। लेकिन फिर भी एहतियात के तौर पर कुछ प्रमुख रोंगों से सावधानी बरतनी चाहिए। जो निम्नवत हैं–

1–झुलसा– इस रोग में पत्तियां झुलस सी जाती हैं और कन्दों की वृद्धि रूक सी जाती है

रोकथाम–

1–बीज कन्दों का चुनाव रोग रहित स्वस्थ पौधों से करना चाहिए।

2– पौधों पर रोग लक्षण दिखाई देने पर डाईथेन–जेड 78 के 0.2 प्रतिषत घोल का छिडकाव करना चाहिए।

तना गलन– इस रोग का प्रकोप विकास में आखिरी पड़ाव पर अगस्त सितम्बर माह में होता है।

इसका लक्षण तना व कन्द के जोड पर दिखता है। कालर वाला भाग सड़ने के कारण तना सिकुड़ कर गिर जाता है।

रोकथामः–

1–बीज कन्दों को बुआई से पुर्व डाइथेन–एम 45 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर कन्द को 20 से 30 मिनट तक शोधित करके बुआई करना चाहिए। रोग दिखाई देने पर 500–100 मिलीलीटर कैपटान के 0.2 प्रतिशत घोल से पौधे की जड़ भिगो के रोकथाम कर सकते है जिसे ड्रेंचिंग कहते हैं।

मोजैकः– यह विशाणुजनित रोग सूरन के उत्पादन को काफी प्रभावित करता है। इस रोग में पत्तियों पर हल्के पीले धब्बे पड़ जाते हैं व पत्तियाँ सिकुड़ सी जाती हैं।

रोकथामः–

1–रोगी पौधे से बुआई हेतु कन्द नहीं लेना चाहिए।

2– मोनोक्रोटोफास 0.05 प्रतिशत अर्थात 5 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर दो छिडकाव करके रोग की रोकथाम कर सकते हैं।

खुदाई व पैदावार

बोआई के 6 से 8 माह पश्चात जब पत्तियां पीली पड कर सूखने लगती है तब फसल खुदाई हेतु तैयार हो जाती है।प्रजातियों एंव बीज कन्दों के आकार व आधार पर इसकी औसत उपज 300 से 400 क्विन्टल प्रति हेक्टेयर तक पायी जाती है।